REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 10 | JULY - 2022

हिं दी समस्या नाटक की प्रेरक परिस्थितियाँ

डॉ.राजेश्वरी कोरे
जिल्हा परिषद प्राथमिक शाळा बनकरवाडी.

प्रेरक परिस्थितियों के अभाव में साहित्य पंगु हो जाता है। उसका विकास थम जाता है। हिंदी के समस्यामूलक साहित्य को जन्म देनेवाली परिस्थितियाँ भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों के कारण ही समस्यामूलक साहित्य का जन्म हुआ।

परतन्त्र भारत की परिस्थितियाँ :

पराधीन भारत की समस्याएँ पराधीनता में बन्दी दिखाई देती हैं। उस समय का साहित्य उसी की अकुलाहट में बन्दी बना छटपटाता हुआ मिलता है। इनमें राजनीतिक परिस्थितियाँ महत्त्वपूर्ण हैं।

ईस्ट इंडिया कम्पनी के राज्य के अत्याचारों के परिणामस्वरुप 1857 में देश का शासन सूत्र कम्पनी के हाथ से निकलकर सम्राट के अधीन ब्रिटिश मन्त्री मण्डल के हाथ में चला गया था। अंग्रेजों ने राजनीतिक दृष्टि से भारत की एकता स्थापित करने के उद्देश्य से पाश्चात्य सभ्यता के प्रचार द्वारा भारतीयों को काले अंग्रेज बना दिया। उन्होंने जिस शिक्षा की नींव डाली उसने भी सस्ते क्लार्कों को जन्म देकर अपनी सोचने की शक्ति को हीन कर दिया। लॉर्ड डलहौजी की लैप्स निति ने रियासतों की स्वतंत्रता और अखण्डता की भावना को जन्म दिया, जिसके विरोध में 9 मे 1857 को सारे भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की आग भडक उठी। शासक और शासित के बीच गहरी खाई बनती चली गयी। रानी विक्टोरिया के शासन काल में भी धनी वर्ग अपना पेट भरने में व्यस्त था। गरीबोंकी अन्न के बिना मृतवत जैसी स्थिति थी। आर्थिक स्थिति बहुत बिगड़ गई थी। जनता पर नए नए कर लगाए जाते थे। सिर्फ भारतीय सम्पत्ति ही नहीं बल्कि उसकी कला भी विदेशियों के हाथ में पडकर अन्तिम घडी गिन रही थी। देश का स्वर्णिम रुप लोहे जैसा बन गया था। धरती जो सोना उगलती थी वह दो वक्त भरपेट अन्न जुटाने में भी असमर्थ हो गई। नए नए उदयोग धन्दे और मजदूरी की सस्ती रकम ने कृषि को बहुत धक्का पहुँचाया। 1855 में काँग्रेस की स्थापना हुई। 1920 में। गांधी जी ने इसकी बागडौर को अपने हाथ में संभालकर 'असहयोग आन्दोलन' चलाया। इसके उपरान्त 1942 में काँग्रेस ने 'भारत छोडो' का प्रस्ताव पेश किया। मुस्लीम लीग के विभाजनवादी घृणात्मक विचार प्रकाश में आए जिन्होंने साम्प्रदायिक दंगों को जन्म दिया। इन महान प्रयासों के फलस्वरुप 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ।

राजनीतिक से कई अधिक प्रेरक परिस्थितियाँ सामाजिक हैं। सत्यता यह है कि राजनीतिक आन्दोलन को जो रुप मिला उसमें सामाजिक क्रान्ति का बहुत बडा हाथ है। समाज में क्रान्ति लाने वाले महापुरुष थे राजाराममोहन राय और स्वामी दयानन्द। राजाराममोहन राय ने ब्राह्मो समाज के माध्यम से बालविवाह-, विधवाविवाह-, अनमेलविवाह-, दहेजप्रथा-, सतीप्रथा - रानडे ने भी .वेश्यओं का नृत्य जैसी कुरीतियों की जड़ो में पानी देने के लिए उन्हें अमान्य समझा। प्रार्थना समाज के माध्यम से न्या जाति प्रथा विरोध, विधवाविवाह का समर्थन-, बालशिक्षा का प्रचार किया। स्वामी दयानन्द -विवाह का अवरोध और स्त्री- सरस्वती द्वारा किए गए दो महत्त्वपूर्ण कार्यो के लिए समाज उनका सदा ऋणी रहेगा, एक राष्ट्रीयता का संचार और राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार प्राचीन संस्कृति का पुनरुत्थान वेदोंके प्रति श्रध्दा जागरण, शिक्षाओं, संस्थाओं के निर्माण द्वारा शिक्षा का प्रचार, नारी के प्रति समादर की भावना, निम्न जातियों के प्रति अस्पृष्यता की भावना का निराकरण, पुरातन रुढियों का त्याग इन सभी कार्यों के लिए भारतीय जनता स्वामी दयानन्द की सदा ऋणी रहेगी। स्वामी रामकृष्ण परमहंस का भी नाम विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने रामकृष्ण मिशन द्वारा गरीबों की सेवा और शिक्षा के प्रचार में सहयोग दिया। इस क्षेत्र में ॲनी बेझंट जैसी विदेशी नारी द्वारा स्थापित 'थियेसाफिकल सोसायटी' ने भी समाजसुधार शिक्षा तथा राष्ट्रीयता की भावना को प्रोत्साहित करने का कार्य किया।

आर्थिक परिस्थितियों का भी अपना महत्त्व है।सामन्ती व्यवस्था खत्म हो गई। अंग्रेजों ने भारत की कृषि प्रणाली तथा छोटे उदयोंगो को समूल नष्ट कर विदेशी उदयोग धन्दे स्थापित किए गए। रेल, डाक, तार आदि सुविधाओं के पीछे उनका स्वार्थ था। बढ़ते हुए कर, महँगाई, अकाल दारिद्रयता ऐसी समस्याएँ उत्पन्न हो चुकी थीं। इसी कारण राजनीतिक स्वन्तत्रता के साथ साथ आर्थिक स्वन्तत्रता का स्वर भी बुलन्द हुआ। 1857 की क्रान्ति के उपरान्त जमींदारो का स्वर बुलंद हो गया जो कृषक वर्ग पर अत्याचार करते थे।

इस प्रकार देश राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में पिसता जा रहा था। लगातार दासता की बेडियों को पहने पहने उनके शरीर में गहरे घाव हो गए थे। बहुत देर तक सोना। कठिन हो गया था। करवट बदलने की देर थी कि जर्जर शरीर में फिर से जान आ गई और 15 ऑगस्ट 1947 को माता के पैरों की बेडी कट गई।

स्वन्तत्र भारत की परिस्थितियाँ :

एक तरफ अंग्रेजों ने देश छोडा किन्तु जाते जाते 'बाँटो और राज्य करो' का विषेला वृक्ष बो दिया, जिसका विष आज भी समय समय पर उबल कर हमारी उन्नति में बाधक हो रहा है। ब्रिटीश शासन काल में लगभग 600 छोटे बडे राज्य थे। ये रजवाडे ब्रिटिश सत्ता के अधिपत्य में थे, लेकिन भारत छोडने से पहले अंग्रेज इन्हें भी स्वतंत्र कर गए। अतः देश की उन्नति के लिए राजनीतिक एकता का होना आवश्यक था। रियासती विभाग के मन्त्री सरदार पटेल ने अपनी कुशाग्र बुद्धि से। इस समस्या को इतनी दक्षता और पटता से सुलझाया कि रक्त की एक बूंद भी नहीं गिरी। मित्रशत्रु सभी दाँतों तले उँगलीयाँ दबाते रह गए। - भारत विभाजन के परिणाम स्वरुप हिन्दुओं और मुसलमानों के पारस्पारिक सम्बन्ध निरन्तर बिगड़ते गए। हिन्दू मुसलमान दंगे भी छिड गए, किन्तु भारत सरकार ने उनपर काबू पाकर राजनीतिक स्थिति को सुधारा। विभाजन से उत्पन्न शरणार्थियों की समस्या भी महत्त्वपूर्ण थी। एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने के लिए भारत सरकार को लाखों करोडो रुपये लगाने पडे। उनको बसाने, भोजन देने तथा काम देने की एक बहुत बडी समस्या बन गई। आवास के साथ साथ बढती हुई जनसंख्या के कारण खादयसामग्री का अभाव हो गया। इसका दूसरा कारण यह भी था कि अधिक उपजाऊ जमीन पाकिस्तान के पास चली -

गई थी। अतः देश की रक्षा के लिए सरकार को अधिक धन देकर विदेशियों से अन्न मँगवाना पड़ा। देश की बिगडती हुई स्थिति के कारण ब्लैक मार्केट, रिश्वत, अनुचित लाभ प्रप्ति आदि भावना को प्रबलता मिली। अंग्रेजों की भारत विभाजन की नीतिने आर्थिक ढाँचे पर भी प्रहार किया। लोगों को न पर्याप्त भोजन मिल रहा था और न निवास। इस परिस्थिति में प्रकृति ने भी अपना प्रकोप शुरु किया। समस्त देश में वर्षा तथा बाढ़ इस वेग से आयी कि इतिहास में उसका उदाहरण नहीं मिल सकता। लाखों एकड़ जमीन जल प्रकोप से ग्रस्त होकर वीरान हो गई। ऐसे में असम को भूकम्प पीड़ित कर एक तिहाई से भी अधिक भाग नष्ट कर दिया। लेकिन भारत इन विविध प्रकार की आर्थिक परिस्थितियों में भी अडिग रहा। स्वर्गीय पण्डित नेहरु जी ने स्वयं परिस्थितियों का अध्ययन किया और उनका सामना करने के लिए। दिल खोलकर धन राशी व्यय की। देश की आर्थिक स्थिति सुधार के लिए प नेहरुजी की.अध्यक्षता में दो पंचवार्षिक योजनाओं का आयोजन किया। इन योजनाओं से लाखों करोडो लोग लाभन्वित हाए । कषि की पैदावार बढाने के लिए तथा देश को आत्म निर्भर करने के लिए सिंचाई व्यवस्था पर पर्याप्त ध्यान दिया। कुएँ, नहरे आदि की भी व्यवस्था की। जमींदारी प्रथा का उन्मूलन किया। औदयोगिकरण में हर तरह के कारखाने खोले गए। शिक्षा समस्या को भी समाज की उन्नति के लिए स्वीकार किया गया।

सामाजिक परिस्थितियाँ भी महत्त्वपूर्ण थीं। नारी स्वतंत्रता के लिए नारी जीवन से सम्बन्धित विविध समस्याओं को लेकर असेब्ली में हिन्दु कोड बिल को रख गया। इस बिल ने नारी स्वतंत्रता और समानता को मामली तौर से समाधानित कर दिया। छआछत की भावना का निषेध कर दिया तथा उसे एक अपराध घोषित कर दिया। दण्ड तक की नियुक्ति भी इसके लिए की गई। उन्हें भी स्वतंत्रतापूर्वक चलनेफिरने या बोलने का पूरा अधिकार मिला। इसके साथ ही- नारी शिक्षा को अनिवार्य कर दिया गया। उसे विचारों की अभिव्यक्ति तथा अधिकारों के उपभोग के लिए पुरुष के समान घोषित कर दिया।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि स्वन्तत्रता प्राप्ति के उपरान्त भारतीय समाज जीवन में सामाजिक, धार्मिक, बौद्धिक एवं नैतिक परिवर्तन हुए जिसके परिणाम स्वरुप अनेक समस्याएँ और उलझने सामने आयी। इस परिवर्तित परिवेश का प्रभाव साहित्य पर पडे बिना रह न सका। स्वतन्त्रता हमारे देश व समाज के इतिहास की सबसे बडी घटना है। इसमें अपने यथार्थ से जिस तरह हमने जीवन और चेतना को विश्वास और अविश्वास में, आस्था और अनास्था में, आशा और संशय के तत्वों में बनाया और बिगाडा। प्रत्येक साहित्यकार अपनी पीड़ा आन्तरिक मर्म को, मानवात्मा के विविध संवेगों और संवेदनाओं के साथ कुछ ऐसी मर्मस्पर्शी वाणी देता है, जो युग चेतना का निर्घोष बन जाती है। मनस्वी लेखक उस संघर्ष से बच नहीं सकता जो जीवन के बदलते हुए मूल्यों में अनिवार्य और अवश्यभावी हो उठता है। परतन्त्र और स्वन्तत्र भारत की परिस्थितियाँ भी मानव जीवन के इतिहास में ऐसा संघर्ष है जिनके साथ न जाने वह कितने वर्षों से लगातार जूझता रहा। निरन्तर बढती हुई समस्याओं ने साहित्यकार की लेखनी को आकर्षित किया। सत्यता यही है कि साहित्यकार साहित्य लिखने के लिए अपने युग में झाँकता है। स्वतन्त्र और परतन्त्र भारत की परिस्थितियाँ तो समस्याओं से युक्त भानुमति का पिटारा थी। साम्प्रदायिकता, बेरोजगारी, आवास, अन्न, धन, जीवन के लिए समस्या बन चुकी थी। इन समस्याओं की ओर तत्कालीन लेखकों का ध्यान आकर्षित किया। परिणाम स्वरुप भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रेमचन्द, प्रसाद, वर्मा, उदयशंकर भट्ट, कौशिक, आयोध्यासिंह उपाध्याय, मैथिलिशरण गुप्त, दिनकर, पंत, निराला आदि ऐसे साहित्यकार हैं जो समय की परिस्थितियों से द्रवीभूत होकर समस्याओं को चित्रित करने की ओर आकर्षित हुए।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

हिंदी:

1) हिंदी नाटक उद्भव और विकास... डॉ.दशरथ ओझा राजपाल ॲन्ड सन्स, दिल्ली, प्रथम, (1961)

2) हिंदी समस्या नाटक डॉ.मान्धाता ओझा नॅशनल पब्लिकेशन, दिल्ली, प्रथम, (1968)

3) हिंदी के समस्या नाटक डॉ.विनकुमार निलाभ प्रकाशन, इलाहबाद, प्रथम, (1968)

4) हिंदी में समस्या साहित्य .. डॉ.विमला भास्कर जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, प्रथम, (1983)

5) आधुनिक हिंदी नाटकों में संघर्षतत्व डॉ.ज्ञानराज गायकवाड पुस्तक संस्थान, 109/50 ए, नेहरुनगर, कानपुर प्रथम, (1975)